संसदीय क्षेत्र बूंदी में 'सुपोषित माँ अभियान' के शुभारंभ कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष का संबोधन

'सुपोषित माँ' अभियान में पधारी हमारी माताएं-बहनें, उनके सहयोग के लिए पधारे हमारे सब भाई और इस काम के सहयोग में लगे समाज के सभी कार्यकर्ता।

मैं आप सबको धन्यवाद देना चाहता हूँ कि आप सबने उस सुपोषित माँ, गर्भवती माँ की चिंता की। दूरदराज के गाँव में जाकर ऐसी गर्भवती महिलाएं जो आने वाले समय के अंदर भारत की धरती पर एक जननी के रूप में एक देशभक्त नौजवान देने वाली है, वह माँ स्वस्थ रहे, उसका होने वाला बेटा-बेटी स्वस्थ रहे, इसकी आप सबने चिंता की। इसीलिए, आज इस कार्यक्रम में हमारे बीच में यहां के लोकप्रिय विधायक माननीय अशोक डोगरा जी, केशवरायपाटन की विधायिका बहन चंद्रकांत जी, तालेड़ा पंचायत समिति के प्रधान साहब, इस संस्था के निदेशक श्री ऋषि कुमार सिंह जी और इस संस्था को सहयोग करने वाले फाउंडेशन सहित सभी को धन्यवाद देना चाहता हूं।

आज मैं अपने सामने जिन माता-बहनों को देख रहा हूं, उन माता-बहनों के मन में एक भाव है कि मेरा होने वाला बेटा और बेटी स्वस्थ रहे। इसीलिए, हमारा एक प्रयास है कि देश के अंदर जो मातृ मृत्यु दर और शिशु मृत्यु दर है, उसको किस तरीके से न्यूनतम स्तर पर ला सकें। उसके लिए सामूहिक प्रयास करने की आवश्यकता है।

समाज को एक ऐसा प्रयास करना चाहिए कि हर गर्भवती माँ स्वस्थ रहे और उसका होने वाला बेटा-बेटी भी स्वस्थ रहे। इसके लिए हम सबको सामूहिक प्रयास करने की आवश्यकता है। इसीलिए मैं माँ की संवेदनाओं को समझता हूँ, उनकी दर्द को और उनकी पीड़ा को समझता हूं।

माँ का प्रयास रहता है कि मेरे घर में जितने भी लोग हैं, उनको पहले पूरा भोजन मिल जाए। उनकी आवश्यकताएं पूरी होने के बाद वह अपने लिए भोजन प्रबंध करने का काम करती है। यह हमेशा हर माँ की संवेदना रहती है। इसीलिए, हमारा समाज अलग संस्कृति और अलग संस्कारों का समाज है।

यहां पर त्याग, बलिदान, सेवा, संपूर्ण परिवार के लिए समर्पण की जिम्मेदारी मां ही उठाती है। हम सबकी जिम्मेदारी होती है कि उस संवेदना की मूर्ति, त्याग की मूर्ति, समर्पण व सेवा की मूर्ति की चिंता समाज करे।

इसीलिए सुपोषित मां अभियान एक अभियान है, जिसमें नौ महीने तक एक मां को पौष्टिक आहार मिले, विटामिन मिले, मिनरल्स मिलें। विटामिन और मिनरल्स की जो कमी है, पौष्टिक आहार से जिसकी पूर्ति हो सकती है, वह आहार मिले। पौष्टिक आहार से पूर्ति न हो सके, अगर उसमें विटामिन की कमी हो, खून की कमी हो, तो दवाइयों का प्रबंध हो।

मेरा विश्वास है कि एक मां को गर्भवती होने के बाद पौष्टिक आहार मिले। बच्चा पैदा होने तक उसकी सारी मेडिकल जांच हमेशा होती रहे, तो मां भी स्वस्थ होगी और होने वाला बच्चा भी स्वस्थ होगा। इसलिए सरकार ने बहुत बढ़िया प्रयास किया है।

माननीय प्रधानमंत्री जी भी हमेशा माताओं के लिए संवेदना के साथ काम करते हैं। उन्होंने भी कई योजनाएं चालू की हैं, लेकिन सरकार के साथ समाज की जिम्मेदारी भी हो जाती है कि उनके गांव में जितनी भी गर्भवती महिलाएं हैं, उन गर्भवती महिलाओं की चिंता वहां रहने वाली सामाजिक कार्यकर्ता करें।

हमारी आंगनवाड़ी की बहनें, आशा सहयोगिनी चिंता करती हैं, लेकिन एक-एक गांव के अंदर अगर समाजसेवी महिलाएं इस बात की चिंता करने लगें और गर्भवती महिलाओं को आवश्यक सलाह देती रहें, अगर उन्हें मेडिकल जांच की आवश्यकता हो, तो हर महीने उनकी मेडिकल जांच हो। अगर उनमें खून की कमी हो, विटामिन की कमी हो, तो उनकी विटामिन और खून की आवश्यकताओं की पूर्ति होती रहे। इससे मां भी स्वस्थ होगी और होने वाले बेटा-बेटी भी स्वस्थ होंगे।

यही 'सुपोषित मां' का ध्येय है और हमारा संकल्प है कि हर गर्भवती मां, जो बच्चा पैदा करने वाली है, वह भी स्वस्थ रहेगी और उसकी होने वाली संतान भी स्वस्थ होगी। यह हमारा अभियान है और इस अभियान को हम अंतिम संकल्प तक पूरा करेंगे। अच्छे मनोभाव से किया हुआ संकल्प सिद्धि तक जरूर पहुंचता है। अच्छे मनोभाव से शुरू किया हुआ काम निश्चित रूप से अंतिम समय तक पूरा होता ही होता है।

मैंने मां के दर्द को देखा है। यहां कई सारी माएं हैं, जो गर्भवती होने के बाद भी अपने परिवार को पालने के लिए, उनकी दो रोटी के इंतजाम के लिए अभी भी तपती धूप में काम करती हैं, खेत में काम करती हैं। कोई गर्भवती महिला मजदूरी का काम करती है, कोई घर पर काम करती है, कोई फैक्ट्री में काम करती है।

उस मां को स्वस्थ रखना हमारी जिम्मेदारी है। मैंने कई माताओं को देखा है कि बच्चा पैदा होने के बाद 15 दिन के अंदर ही वह अपने परिवार को पालने के लिए काम पर चली जाती हैं।

बच्चे को पालने में रखकर या धूप में कहीं टेम्परेरी झूला लगाती हैं, वह खेलता रहता है और माताएं काम करती रहती हैं। उनकी मजबूरी है कि अगर दो टाइम की रोटी का इंतजाम नहीं होगा तो परिवार में चूल्हा कैसे जलेगा।

मैंने कई माताओं से पूछा कि आपको तो अभी 15 दिन हुए हैं, लेकिन बड़े खानदान की महिलाएं तो बच्चा पैदा होने के बाद साल भर तक काम पर नहीं जाती हैं। उनको सरकारी नौकरी में भी 6 महीने की

छुट्टी मिलती है, लेकिन उन्होंने कहा कि हमारे घर का चूल्हा कौन जलाएगा, हमारे पति और बच्चे के खाने का इंतजाम कौन करेगा। यह चिंता मैंने व्यक्तिगत रूप से देखी है।

मैंने कई खेत-खलिहानों के अंदर, कई फैक्ट्रियों के अंदर, रोड साइड पर गर्भवती महिलाओं को तपती धूप में काम करते हुए देखा है, क्योंकि शाम को उनको घर का चूल्हा जलाना है। उनके चूल्हे का इंतजाम हमें करना है। इसलिए गर्भवती महिला को किसी बात की कोई चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। उनके पोषण से लेकर, मेडिकल जांच से लेकर, उनको बच्चा होने की प्रक्रिया तक, उसकी डिलीवरी तक हमारी पूरी टीम उनके साथ खड़ी है, उनके सहयोग के लिए खड़ी है। हर महीने मेडिकल जांच करने के लिए डॉक्टर्स की टीम आएगी।

जिस-जिस चीज की कमी रही है, अगर उस कमी की पूर्ति पौष्टिक आहार से हो सकती है तो उसको पौष्टिक आहार उपलब्ध करवाया जाएगा। अगर दवाइयों की आवश्यकता होगी तो दवाइयां उपलब्ध करवाई जाएंगी। समय पर वैक्सीनेशन हो, उसके लिए प्रबंध किया जाएगा और डिलीवरी के समय सुरक्षित मातृत्व हो, उसके लिए भी इंतजाम किया जाएगा तथा आवश्यक डॉक्टर्स की टीम नियमित रूप से आपकी निगरानी रखेगी, जिससे हम स्वस्थ मां और स्वस्थ बच्चे को देख सकें, जिससे हमारा यह सपना पूरा हो।

अभी मुझे एक भाई मिला था, उसके हाथ में एक महीने का बच्चा था। उसने कहा कि हमें नौ महीने तक इसी तरीके से पौष्टिक आहार मिला और आज मेरा बच्चा स्वस्थ है। जब कोटा के अंदर मैंने कार्यक्रम का समापन किया और उन महिलाओं को बुलाया तो उनके चेहरे पर खुशी थी। कई माताओं ने कहा कि मेरा पहला बच्चा कैसा था और अब दूसरा बच्चा कैसा है।

मेरा विश्वास है और भरोसा है कि इस पौष्टिक आहार में कमी आए, तो आप सभी गर्भवती माताएं बताना, जितना अच्छा आहार आप लेंगी, मन जितना स्वस्थ रखेंगी, उतना ही अच्छा आपका बेटा या बेटी होगा। अगर बेटा हो तो ठीक है। अगर बेटी हो, तो जिम्मेदारी हमारी है। हम उस बेटी का भी इंतजाम करेंगे, क्योंकि बेटियां ठीक से परिवार को संभालती हैं। जहां बेटियां पैदा होती हैं, उस घर को भी संभालती हैं और जहां शादी होती है, उस परिवार को भी संभालती है। यह भारत की संस्कृति है। अगर किसी के अंदर दो-दो परिवारों को संभालने की संवेदना है तो वह माताओं में है।

इसलिए हमारे मन की यही इच्छा है, हमारा सपना यही है कि हमारे हर घर की माँ खुश रहे, पौष्टिक आहार से समृद्ध रहे, उसके बेटा-बेटी भी स्वस्थ रहे और वह माँ भी स्वस्थ रहे। मैं आपसे एक और

निवेदन करना चाहता हूँ। हम आपको एक कॉन्टैक्ट नम्बर देंगे। आपको कभी भी कोई भी दिक्कत हो, तो आप उस कॉन्टैक्ट नम्बर पर टेलीफोन करें। उससे आपके घर पर डॉक्टर देखने आएंगे।

अगर आपको हॉस्पिटल तक ले जाने की दिक्कत होगी तो उसका भी इंतजाम करेंगे। अगर आपको और ज्यादा पौष्टिक आहार की आवश्यकता होगी तो वह भी आपको उपलब्ध कराएंगे। अगर आपको खून की आवश्यकता होगी तो आपको खून उपलब्ध कराएंगे। अगर आपको विटामिन और अन्य दवाओं की आवश्यकता होगी तो वह भी आपको घर बैठे उपलब्ध कराएंगे। आपको किसी भी तरह से परेशान होने की आवश्यकता नहीं है। हम आपके साथ हैं। यह परिवार आपके साथ है।

हमारा सपना है कि हर माँ स्वस्थ रहे, बच्चा स्वस्थ रहे और हम एक खुशहाल भारत और समृद्ध भारत का सपना पूरा कर सके। आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद। आप इतनी दूर से आई हैं, तपती हुई धूप में आई हैं। आपको अगली बार आने की आवश्यकता नहीं होगी, क्योंकि यह सब हम होम डिलीवरी सिस्टम से आपके घरों तक पहुंचाएंगे और वहां आपके गांव में एक मोबाइल वैन गाड़ी आएगी, जो आपका चैकअप करेगी। आपको नियमित चैकअप करवाना है।

मुझे एक डॉक्टर ने कहा कि व्यक्ति इतना लापरवाह होता है कि कोई मशीन या गाड़ी की जिस दिन की डेट होती है, उस समय हो सकता है कि उसकी रिपेयरिंग का या मेंटेनेंस का समय हो चुका हो, तो व्यक्ति खुद के लिए जांच नहीं करवाता है। सब ठीक हो, ऐसा नहीं है। आपको नियमित जांच करवानी ही करवानी है। आप यह मानकर चलिए कि कम से कम दो महीने में एक बार जांच होनी ही चाहिए। अगर आपको किसी तरह की परेशानी आती है जैसे डॉक्टर फीस लेता है और आपके पास फीस के पैसे नहीं है तो हम आपको उपलब्ध कराएंगे।

आपको कोई चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। आपका टेलीफोन का एक कॉल आएगा और उस कॉल के बाद सारे काम करने की जिम्मेदारी हमारी है। हम तो बस यह चाहते हैं कि हमारी हर माँ स्वस्थ रहे, सुपोषित रहे। हमारा यह सपना पूरा हो, उसके लिए आपको सहयोग करने की आवश्यकता है। आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद।

———